श्रावक की ग्यारह प्रतिमाएं

श्रावक के आचरण की ग्यारह प्रतिमाएं मानी गई है। भोगो से राग घटाना, संयम को बढ़ाना, कर्तव्य पालन की प्रतिज्ञा करना प्रतिमा कहलाती है। इन प्रतिमाओं में अपनी-अपनी प्रतिमा से संबंध रखने वाले व्रत एवं पिछली प्रतिमाओं के संकल्प व अगली प्रतिमा धारण की भावना ये नियम जरूरी होते हैं।

१. दर्शन प्रतिमा : सम्यक्तव को पालने वाला, संसार-शरीर और भोगों से विरक्त, पंचपरमेष्ठी की शरण को प्राप्त, अष्टमूल गुणों को पालने वाला और सप्त व्यसनों का त्यागी पहली प्रतिमा धारी है।

२. व्रत प्रतिमा : जो निःशल्य भाव से निरतिचार, पंच अणुव्रत, सात शीलों को पालता है वह व्रत प्रतिमा का धारी है।

३. सामयिक प्रतिमा : जो श्रावक प्रत्येक दिशा में तीन-तीन आवर्त्त और चार प्रणाम करने वाला, बाह्य एवं अभ्यंतर परिग्रह से रहित, मन वचन और काय की शुद्धि सहित पाँचों पापों का त्याग कर तीनों संधि काल में आत्मचिंतन करता हो वह सामयिक प्रतिमा का धारी है।

४. प्रोषधोपवास प्रतिमा : प्रत्येक महीने की दो अष्टमी और चतुर्दशी को अपनी शक्ति को न छुपाते हुए आहार त्याग करना प्रोषधोपवास व्रत है।

५. सचिंत त्याग प्रतिमा : दया मूर्ति जीव को कच्चे फल, मूल, शाक, कोपल, कंद, फूल व बीजों को नहीं खाते सचिंत त्याग प्रतिमा पालते हैं।

६. रात्रि भुक्ति त्याग प्रतिमा : जो नव कोटि (मन, वचन, काय, कृत, कारित और अनुमोदन) से चारों प्रकार रात्रि आहार त्याग कर देता है वह रात्रि भुक्ति त्यागी है।

७. ब्रह्मचर्य प्रतिमा : मन, वचन, काम, कृत, कारित अनुमोदना से मैथुन का त्याग करना ब्रह्मचर्य प्रतिमा है।

८. आरम्भ त्याग प्रतिमा : जीव हिंसा के कारण रुप नौकरी, खेती, व्यापार एवं गृहस्थी संबंधी आरम्भ से विरक्त होना आरम्भ त्याग प्रतिमा है।

९. परिग्रह त्याग प्रतिमा : अंतरंग और बहिरंग परिग्रह को त्याग निर्ममत्व होता हुआ, मायाचार रहित, स्थिर चित्त वाला संतोषी श्रावक परिग्रह त्याग प्रतिमा का धारी है।

१०. अनुमति त्याग प्रतिमा : जो आरम्भ, परिग्रह अथवा विवाह आदि इस लोक संबंधी कार्यो में अनुमोदना नहीं करता जो समता बुद्धि वाला है वह अनुमति त्याग प्रतिमा धारी है।

११. उद्दिष्ट त्याग प्रतिमा : जो घर त्याग गुरु के समीप व्रतों को ग्रहण कर तप करता है, भिक्षा वृति से भोजन करता है, खण्ड वस्त्र को धारण करता है। वह उद्दृष्ट प्रतिमा धारी है। इस प्रतिमा को ऐल्लक व क्षुल्लक धारते हैं।